श्रीराधासुधाशतक

हीन हौं अधीन हौं तिहारो ब्रजसाहिबनी,
हिये में मलीन करुना की ओर ढरिये।
भारी भवसागर में बौरत परैहू मोहि,
काम क्रोध लोभ मोह लागे सब अरिये॥
बुरो भलो जैसो तैसो तेरे द्वार परयौ मैं तो,
मेरे गुन औगुन तैं मन में न धरिये।
कीरतिकिसोरी वृषभान की दुहाई तोहि,
लच्च लच्छ भाँति सों हठी की पच्छ करिये॥

प्रथम संस्करण – २,००० प्रतियाँ

प्रकाशित २८ फरवरी २०२३

फाल्गुन, शुक्लपक्ष, रंगीली होली, नवमी, २०७९ विक्रमी सम्वत्

प्राप्ति-स्थान

मान मन्दिर, बरसाना

फोन – ९९२७३३८६६६

एवं

श्रीराधा खंडेलवाल ग्रन्थालय

अठखम्बा बाजार, वृन्दावन

फोन – ९९९७९७७५५१

श्री मानमन्दिर सेवा संस्थान

गह्वरवन, बरसाना, मथुरा (उ.प्र.)

फोन – ९९२७३३८६६६

http://www.maanmandir.org

info@maanmandir.org

प्राक्कथन

प्रस्तुत सद्ग्रन्थ के रचनाकार **'श्रीहठीजी'** का अवतरण सम्बन्धित वृतान्त अज्ञात है, ग्रन्थ के रचनाकालानुसार इनके जन्म का समय अठारहवीं शताब्दी कहा जाता है। इस कृति का एक प्रकाशन-कार्य सन् १८९७ में 'खड्ग विलास प्रेस, बांकीपुर' से हुआ था। सम्भवतः ग्रन्थ का यह सर्वप्रथम प्रकाशन था।

'अवतरित महापुरुष' अलौकिक प्रतिभा के धनी हुआ करते हैं, उनकी प्रतिभा चमत्कृति असमोर्ध्व होती है। भगवद्रस में निमग्न ऐसी ही दिव्य विभूति **श्रीहठीजी** ने अध्यात्मजगत को अपनी आभा से आलोकित किया है। कविताकामिनी के कान्त कविवर हठीजी की 'वाणी' मानो साक्षात्कार के पश्चात् ही 'राधामाधव की लीलाओं' की अभिव्यक्ति कर रही हो, ऐसा उनकी अनूठी 'रचनाओं' से प्रतीत होता है। भावोद्रेक के साथ-साथ रस, छन्द, अलङ्कार का मिश्रण उन 'रचनाओं' में चार चाँद लगा देता है। सम्पूर्ण भावग्राहीजन आज भी उनकी वाणी का आस्वादन करते थकते नहीं हैं। ब्रज के विरक्त संत सद्गुरुदेव पूज्य बाबा (पद्मश्री श्री रमेश बाबा) ने देखा कि ब्रजेश्वरी श्रीराधारानी की लीला-श्रृंगार का बड़ा ही अद्भुत निरूपण उनके 'राधासुधाशतक' में हुआ है। बस, फिर क्या था? उदारता की सीमा पूज्य बाबा ने निर्णय लिया कि यह अद्भुत रस सभी वैष्णवों द्वारा ग्राह्य होना चाहिए। अतः वर्तमान में अनुपलब्ध-ग्रन्थ के मुद्रीकरण के लिए आज्ञा दी; यह पावन 'ग्रन्थ' श्रीराधारसावगाहनार्थ प्रकाशित किया जा रहा है।

यह प्रकाशन 'ग्रन्थकार के जीवनवृत्त पर प्रकाश डालने के उद्देश्य' से नहीं किया गया है प्रत्युत उनकी सुमधुर व अनुपम रचना का रसास्वादन सभी रसिकजनों को सहज सुलभ हो सके, यही इस प्रकाशन का पावनमय उद्देश्य है।

गुण–गरिमागार, करुणा–पारावार, युगललब्ध–साकार इन विभूति विशेष गुरुप्रवर पूज्य बाबाश्री के विलक्षण विभा–वैभव के वर्णन का आद्यन्त कहाँ से हो यह विचार कर मन्द मति की गति विथकित हो जाती है।

विधि हरि हर कवि कोविद बानी ।
कहत साधु महिमा सकुचानी ॥
सो मो सन कहि जात न कैसे ।
साक बनिक मनि गुन गन जैसे ॥

(श्रीरामचरितमानस, बालकाण्ड –३क)

पुनरपि

जो सुख होत गोपालहि गाये ।
सो सुख होत न जप तप कीन्हे, कोटिक तीरथ न्हाये ।

(सूर–विनयपत्रिका)

अथवा

रस सागर गोविन्द नाम है रसना जो तू गाये ।
तो जड़ जीव जनम की तेरी बिगड़ी हू बन जाये ॥
जनम–जनम की जाये मलिनता उज्ज्वलता आ जाये ॥

(बाबाश्री द्वारा रचित 'बरसाना' से संग्रहीत)

कथनाशय इस पवित्र चरित्र के लेखन से निज कर व गिरा पवित्र करने का स्वसुख व जनहित का ही प्रयास है।

अध्येतागण अवगत हों इस बात से कि यह 'लेख' मात्र सांकेतिक परिचय ही दे पाएगा अशेष श्रद्धास्पद (बाबाश्री) के विषय में। सर्वगुणसमन्वित इन दिव्य–विभूति का प्रकर्ष–आर्ष जीवन–चरित्र कहीं लेखन–कथन का विषय है?

"करनी करुणासिन्धु की मुख कहत न आवै"

(सूर–विनयपत्रिका)

मलिन अन्तस् में सिद्ध सन्तों के वास्तविक वृत्त को यथार्थ रूप से समझने की क्षमता ही कहाँ, फिर लेखन की बात तो अतीव दूर है तथापि इन लोक–लोकान्तरोत्तर विभूति के चरितामृत की श्रवणाभिलाषा ने असंख्यों के मन को निकेतन कर लिया, अतएव सार्वभौम महत् वृत्त को शब्दबद्ध करने की धृष्टता की।

तीर्थराज प्रयाग को जिन्होंने जन्मभूमि बनने का सौभाग्य–दान दिया। माता–पिता के एकमात्र पुत्र होने से उनके विशेष वात्सल्यभाजन रहे। ईश्वरीय–योजना ही मूल हेतु रही आपके अवतरण में। दीर्घकाल तक अवतरित दिव्य दम्पति स्वनामधन्य श्री बलदेव प्रसाद शुक्ल ('शुक्ल भगवान्' जिन्हें लोग कहते थे) एवं श्रीमती हेमेश्वरी देवी को सन्तान–सुख अप्राप्य रहा, सन्तान–प्राप्ति की इच्छा से कोलकाता के समीप तारकेश्वर में जाकर आर्त पुकार की, परिणामतः सन् १९३० पौष मास की सप्तमी को रात्रि ९:२७ बजे कन्यारत्न श्री तारकेश्वरी (दीदी जी) का अवतरण हुआ, अनन्तर दम्पत्ति को पुत्र–कामना ने व्यथित किया। पुत्र–प्राप्ति की इच्छा से कठिन यात्रा कर रामेश्वर पहुँचे, वहाँ जलान्न त्याग कर शिवाराधन में तल्लीन हो गये, पुत्र कामेष्टि महायज्ञ किया। आशुतोष हैं रामेश्वर प्रभु, उस तीव्राराधन से प्रसन्न हो तृतीय रात्रि को माता जी को सर्वजगन्निवासावास होने का वर दिया। शिवाराधन से सन् १९३८ पौष मास कृष्ण पक्ष की सप्तमी तिथि को अभिजित मुहूर्त मध्याह्न १२ बजे अद्भुत बालक का ललाट देखते ही पिता (विश्व के प्रख्यात व प्रकाण्ड ज्योतिषाचार्य) ने कह दिया –

"यह बालक गृहस्थ ग्रहण न कर नैष्ठिक ब्रह्मचारी ही रहेगा, इसका प्रादुर्भाव जीव–जगत के निस्तार निमित्त ही हुआ है।"

वही हुआ, गुरु–शिष्य परिपाटी का निर्वाहन करते हुए शिक्षाध्ययन को तो गये किन्तु बहु अल्पकाल में अध्ययन समापन भी हो गया।

"अल्पकाल विद्या बहु पायी"

गुरुजनों को गुरु बनने का श्रेय ही देना था अपने अध्ययन से। सर्वक्षेत्र–कुशल इस प्रतिभा ने अपने गायन–वादन आदि ललित कलाओं से विस्मयान्वित कर दिया बड़े–बड़े संगीत–मार्तण्डों को। प्रयागराज को भी स्वल्पकाल ही यह सानिध्य सुलभ हो सका "तीर्थी कुर्वन्ति तीर्थानि" ऐसे अचिन्त्य शक्ति सम्पन्न असामान्य पुरुष का। अवतरणोद्देश्य की पूर्ति हेतु दो बार भागे जन्मभूमि छोड़कर ब्रजदेश की ओर किन्तु माँ की पकड़ अधिक मजबूत होने से सफल न हो सके। अब यह तृतीय प्रयास था, इन्द्रियातीत स्तर पर एक ऐसी प्रक्रिया सक्रिय हुई कि तृणतोड़नवत् एक झटके में सर्वत्याग कर पुनः गति अविराम हो गई ब्रज की ओर।

चित्रकूट के निर्जन अरण्यों में प्राण–परवाह का परित्याग कर परिभ्रमण किया; सूर्यवंशमणि प्रभु श्रीराम का यह वनवास–स्थल 'पूज्यपाद' का भी वनवास–स्थान रहा। "स रक्षिता रक्षति यो हि गर्भे" इस भावना से निर्भीक घूमे उन हिंसक जीवों के आतंक संभावित भयानक वनों में।

आराध्य के दर्शन को तृषान्वित नयन, उपास्य को पाने के लिए लालसान्वित हृदय अब बार–बार 'पाद–पद्मों' को श्रीधाम बरसाने के लिए ढकेलने लगा, बस पहुँच गए बरसाना। मार्ग में अन्तस् को झकझोर देने वाली अनेकानेक विलक्षण स्थितियों का सामना किया। मार्ग का असाधारण घटना संघटित वृत्त यद्यपि अत्यधिक रोचक, प्रेरक व पुष्कल है तथापि इस दिव्य जीवन की चर्चा स्वतन्त्र रूप से भिन्न ग्रन्थ के निर्माण में ही सम्भव है, अतः यहाँ तो संक्षिप्त चर्चा ही है। बरसाने में आकर तन–मन–नयन आध्यात्मिक मार्गदर्शक के अन्वेषण में तत्पर हो गए। श्रीजी ने सहयोग किया एवं निरन्तर राधारससुधा सिन्धु में अवस्थित, राधा के परिधान में सुरक्षित, गौरवर्णा की शुभ्रोज्वल कान्ति से आलोकित–अलङ्कृत युगल सौख्य में आलोडित, नाना पुराणनिगमागम के ज्ञाता, महावाणी जैसे निगूढ़ात्मक ग्रन्थ के

प्राकट्यकर्ता "अनन्त श्री सम्पन्न श्री श्री प्रियाशरण जी महाराज" से शिष्यत्व स्वीकार किया।

ब्रज में भामिनी का जन्म स्थान 'बरसाना', बरसाने में भामिनी की निज कर निर्मित 'गह्वर–वाटिका' "बीस कोस वृन्दाविपिन पुर वृषभानु उदार, तामें गहवर वाटिका जामें नित्य विहार" और उस गह्वरवन में भी महासदाशया मानिनी का मनभावन मान–स्थान 'श्रीमानमन्दिर' ही मानद (बाबाश्री) को मनोनुकूल लगा। 'मानगढ़' ब्रह्माचलपर्वत की चार शिखरों में से एक महान शिखर है। उस समय तो यह 'बीहड़ स्थान' दिन में भी अपनी विकरालता के कारण किसी को मन्दिर–प्राङ्गण में न आने देता। मन्दिर का आन्तरिक मूल–स्थान चोरों को चोरी का माल छिपाने के लिए था। चौराग्रगण्य की उपासना में इन विभूति को भला चोरों से क्या भय?

भय को भगाकर भावना की – "तस्कराणां पतये नमः" – चोरों के सरदार को प्रणाम है, पाप–पङ्क के चोर को भी एवं रकम–बैंक के चोर को भी। 'ब्रजवासी चोर भी पूज्य हैं हमारे' इस भावना से भावित हो द्रोहार्हणों (द्रोह के योग्य) को भी कभी द्रोह–दृष्टि से न देखा, अद्वेष्टा के जीवन्त स्वरूप जो ठहरे। फिर तो शनैः–शनैः विभूति की विद्यमत्ता ने स्थल को जाग्रत कर दिया, अध्यात्म की दिव्य सुवास से परिव्याप्त कर दिया।

जग–हित–निरत इस दिव्य जीवन ने असंख्यों को आत्मोन्नति के पथ पर आरूढ़ कर दिया एवं कर रहे हैं। श्रीमच्चैतन्यदेव के पश्चात् कलिमलदलनार्थ नामामृत की नदियाँ बहाने वाली एकमात्र विभूति के सतत् प्रयास से आज ३२ हजार से अधिक गाँवों में प्रभातफेरी के माध्यम से नाम निनादित हो रहा है। ब्रज के कृष्णलीला सम्बन्धित दिव्य वन, सरोवर, पर्वतों को सुरक्षित करने के साथ–साथ सहस्रों वृक्ष लगाकर सुसज्जित भी किया। अधिक पुरानी बात नहीं है, आपको स्मरण करा दें – सन् २००९ में "श्रीराधारानी ब्रजयात्रा" के दौरान ब्रजयात्रियों को साथ लेकर स्वयं ही बैठ गये आमरण अनशन पर इस संकल्प के साथ कि जब तक ब्रज–पर्वतों पर हो रहे खनन द्वारा आघात को सरकार

रोक नहीं देगी, मुख में जल भी नहीं जायेगा। समस्त ब्रजयात्री भी निष्ठापूर्वक अनशन लिए हुए हरिनाम–संकीर्तन करने लगे और उस समय जो उद्दाम गति से नृत्य–गान हुआ; नाम के प्रति इस अटूट आस्था का ही परिणाम था कि १२ घंटे बाद ही विजयपत्र आ गया। दिव्य विभूति के अपूर्व तेज से साम्राज्य–सत्ता भी नत हो गयी। गौवंश के रक्षार्थ गत १५ वर्ष पूर्व माताजी गौशाला का बीजारोपण किया था, देखते ही देखते आज उस वट बीज ने विशाल तरु का रूप ले लिया, जिसके आतपत्र (छाया) में आज ५५,००० से अधिक गायों का मातृवत् पालन हो रहा है। संग्रह–परिग्रह से सर्वथा परे रहने वाले इन महापुरुष की 'भगवन्नाम' ही एकमात्र सरस सम्पत्ति है।

परम विरक्त होते हुए भी बड़े–बड़े कार्य सम्पादित किये इन ब्रज–संस्कृति के एकमात्र संरक्षक, प्रवर्द्धक व उद्धारक ने। गत ७० वर्षों से ब्रज में क्षेत्रसन्यास (ब्रज के बाहर न जाने का प्रण) लिया एवं इस सुदृढ़ भावना से विराज रहे हैं। ब्रज, ब्रजेश व ब्रजवासी ही आपका सर्वस्व हैं। असंख्य जन आपके सान्निध्य–सौभाग्य से सुरभित हुये, आपके विषय में जिनके विशेष अनुभव हैं, विलक्षण अनुभूतियाँ हैं, विविध विचार हैं, विपुल भाव–साम्राज्य है, विशद अनुशीलन हैं; इस लोकोत्तर व्यक्तित्व ने विमुग्ध कर दिया है विवेकियों का हृदय। वस्तुतः कृष्णकृपालब्ध पुमान् को ही गम्य हो सकता है यह व्यक्तित्व। रसोदधि के जिस अतल–तल में आपका सहज प्रवेश है, यह अतिशयोक्ति नहीं कि रस–ज्ञाताओं का हृदय भी उस तल से अस्पृष्ट ही रह गया।

'आपकी आन्तरिक स्थिति क्या है' यह बाहर की सहजता, सरलता को देखते हुए सर्वथा अगम्य है। आपका अन्तरंग लीलानन्द, सुगुप्त भावोत्थान, युगल–मिलन का सौख्य इन गहन भाव–दशाओं का अनुमान आपके सृजित साहित्य के पठन से ही सम्भवहै। आपकी अनुपम कृतियाँ – श्री रसिया रसेश्वरी, स्वर वंशी के शब्द नूपुर के, ब्रजभावमालिका, भक्तद्वय चरित्र इत्यादि हृदयद्रावी भावों से भावित विलक्षण रचनाएँ हैं।

आपका त्रैकालिक सत्संग अनवरत चलता ही रहता है। साधक–साधु–सिद्ध सबके लिए सम्बल हैं आपके त्रैकालिक रसार्द्रवचन। दैन्य की सुरभि से सुवासित अद्भुत असमोर्ध्व रस का प्रोज्वल पुञ्ज है यह दिव्य रहनी, जो अनेकानेक पावन आध्यात्मास्वाद के लोभी मधुपों का आकर्षण केन्द्र बन गयी, सैकड़ों ने छोड़ दिए घर–द्वार और अद्यावधि शरणागत हैं; ऐसा महिमान्वित–सौरभान्वित वृत्त विस्मयान्वित कर देने वाला स्वाभाविक है।

रस–सिद्ध–सन्तों की परम्परा इस ब्रजभूमि पर कभी विच्छिन्न नहीं हो पाई। श्रीजी की यह 'गह्वर–वाटिका' जो कभी पुष्पविहीन नहीं होती, शीत हो या ग्रीष्म, पतझड़ हो या पावस, एक न एक पुष्प तो आराध्य के आराधन हेतु प्रस्फुटित ही रहता है। आज भी इस अजरामर, सुन्दरतम, शुचितम, महत्तम, पुष्प (बाबाश्री) का जग 'स्वस्तिवाचन' कर रहा है। आपके अपरिसीम उपकारों के लिए हमारा अनवरत वन्दन अनुक्षण प्रणति भी न्यून है।

श्रीब्रजधामेश्वरी 'राधिकारानी'

यस्याः कदापि वसनाञ्चलखेलनोत्थ धन्यातिधन्यपवनेन कृतार्थमानी।
योगीन्द्रदुर्गमगतिर्मधुसूदनोऽपि तस्या नमोऽस्तु वृषभानुभुवो दिशेऽपि॥

(श्रीराधासुधानिधि -१)

श्रीराधासुधानिधिकार ने श्रीराधाप्रेम की परम प्रगाढ़ता के कारण अपनी बहुत दीनता दिखाते हुए ग्रन्थ के प्रारम्भिक श्लोक में न तो श्रीराधारानी, न श्रीकृष्ण को, किसी को भी प्रणाम नहीं किया, यह एक बहुत विचित्र बात थी। ग्रंथकार का भाव है कि हम तो श्रीजी को प्रणाम करने योग्य ही नहीं हैं, उन वृन्दावनेश्वरी को हम जैसे तुच्छ जीव कैसे प्रणाम कर सकते हैं, जिसमें 'यस्याः' कहकर श्रीराधिका को संबोधित किया, उनका सुदैन्यमय गूढतम भाव यह है कि स्वयं भगवान् श्रीकृष्ण भी श्रीजी के प्रेमातिरेक में भाव-विभोर होकर पूरा नाम नहीं ले पाते हैं, उन लाड़िलीजी का नाम हम कैसे लें ? इसलिए मंगलाचरण में नाम नहीं लिया और 'सर्वनाम' से इष्टदेव को सुसंबोधित करते हुए सर्वप्रथम परममंगलमय 'श्रीबरसाने' धाम को प्रणाम किया है। श्रीशुकमहाप्रभु ने भी 'सर्वनाम' स्पष्ट रूप से साक्षात् गुरुस्वरूपा परमप्रेममयीमहादेवी 'श्रीराधा' का नाम नहीं लिया; से ही श्रीमद्भागवत में राधालीला आई है, वस्तुतः श्रीमद्भागवत में जैसा राधाचरित्र का वर्णन है वैसा अन्य किसी ग्रन्थ में नहीं है, वे लोग बहुत ही नासमझ हैं जो कहते हैं कि श्रीमद्भागवत में 'राधा नाम' नहीं है। जैसे कोई पुत्र अपने माता या पिता के पास जाता है तो उनका नाम नहीं लेता है। गुरुदेव के पास जायेंगे तो 'भगवन्' कहेंगे, गुरुजी का नाम लेकर कोई उन्हें संबोधित नहीं करता, यह एक प्रेम की विधा है। यदि कोई यह प्रश्न पूछे कि ग्रन्थ के बीच में तो आपने कई बार 'श्रीजी' का नाम ले लिया तो इसका उत्तर अन्त में कहते हैं –

क्वासौ राधा निगमपदवीदूरगा कुत्र चासौ

कृष्णस्तस्याः कुचमुकुलयोरन्तरैकान्तवासः।
क्काहं तुच्छः परममधमः प्राण्यहो गर्हकर्मा
यत् तन् नाम स्फुरति महिमा ह्येष वृन्दावनस्य॥ (राधासुधानिधि - २६०)

श्रीराधारानी की ऐसी अनंत महिमा है कि जहाँ वेद भी नहीं पहुँच सकते हैं और कृष्ण के लिए कहते हैं –

"कृष्णस्तस्याः कुचमुकुलयोरन्तरैकान्तवासः।"कृष्ण तो एक भौंरे थे जो श्रीराधिका रूपी कमल के भीतर सदा के लिए बंद हो गये, सृष्टि-प्रपंच को छोड़कर उन्होंने एकान्तवास ले लिया। फिर "क्काहं तुच्छः परममधमः प्राण्यहो गर्हकर्मा" कहाँ मैं तुच्छ परम अधम प्राणी 'राधानाम' लेने के योग्य हूँ ? मैंने जो श्रीजी का नाम लिया उसका कारण है –"यत् तन् नाम स्फुरति महिमा ह्येष वृन्दावनस्य॥" इस ब्रजरज में आने वाला जो भी व्यक्ति है, उसे यह रजरानी अधिकार दे देती हैं कि 'जा तू **राधा-राधा** कह' ये यहाँ की मिट्टी का प्रताप है; इस ब्रजभूमि में जो भी आता है, वह सहज में ही 'राधे-राधे' कहने लगता है। इसलिए ब्रजवासीजन कहते हैं कि यहाँ आकर भी जिसने **राधा-राधा** नहीं कहा, 'राधा' नाम नहीं जाना, उससे ज्यादा अभागा कोई नहीं है, ब्रजवासी गाते हैं –

"जो बरसाने (वृन्दावन) में आयो, जानै राधा नाम न गायो।
वाके जीवन को धिक्कार रटे जा राधे-राधे॥"

ऐसी असीम महामहिमान्वित श्रीराधिका के अंचल की सुगन्धित वायु को पाकर अनंत कोटि ब्रह्माण्ड नायक श्यामसुन्दर भी धन्यातिधन्य (परमकृतार्थ) हो जाते हैं, जिनकी आराधना स्वयं रसिकशेखर श्यामसुन्दर करते हैं, इसलिए 'श्रीमानमन्दिर' उसी आराधना-शक्ति श्रीराधारानी का मानभवन है, जहाँ आज भी वही रसमयी आराधना का स्वरूप साक्षात् दृष्टिगोचर होता है।"

अनुक्रमणिका

क्रमांक **पृष्ठांक**

१. श्रीराधासुधाशतक के दोहे १-२
२. श्रीराधासुधाशतक के सवैया ३-७
३. श्रीराधासुधाशतक के कवित्त ७-५०

सवैया

१. कर कञ्जन जावक दै रुचि सौं.....३
२. चंद सो आनन कंचन से.....६
३. जाकी कृपा सुक ग्यानी भये.....६
४. नवनीत गुलाब तैं कोमल हैं.....४
५. परी रहै वैर परोसिनै पै.....३
६. बड़ोई प्रताप बड़ोई सुहाग.....७
७. ब्रज की बलि आजु निकुञ्जन में ६
८. भौन तैं गोन कैं भानुलली.....४
९. मंजन चीर सु हार हिये.....३
१०.माखन तैं मखतूलहू तैं.....५
११.मोर पखा गरे गुञ्ज की माल.....४
१२.रम्भा रमासी उमासी हठी.....६
१३.राधिके काहे करो हठ री.....५
१४.लीने लली ललतादिक सङ्ग.....५

१५.हीरन के हठी हार गरै.....४
१६.हेलीरी तैं लखे आजु के ख्याल.....३

कवित्त

१७.अगर लिपायौ चौक बगर सुगन्ध धुन्ध.....३३
१८.अतर पुतायो बाने खासे खसखाने तामै.....२६
१९.अतर पुतायौ चौक चंदन लिपायो बिछी.....११
२०.अतर पुतायौ मढ्यौ महल सुगन्धन सौं.....१०
२१.आउ आउ आली एक कौतुक दिखाऊँ तोहि.....४४
२२.आजु हौं गई ती भौन भोर वृषभानुजू के.....३७
२३.आजु हौं गई ही बीर सहज निकुञ्जन में.....४१
२४.आलसी हौं कूर हौं कपूत भाँति भाँतिन को.....४६
२५.कंचन अटा पै बैठी जोवत घटा हैं प्यारी.....३२
२६.कञ्चन फरस फैली मनिन मयूखै तन्यौ.....१२
२७.कञ्चन महल चदैं चाँदनी बिछौना हठी.....१२
२८.कञ्चन महल चौक चाँदनी बिछौना तामैं.....१४
२९.करन तरोना जगमगत जराऊ तापै.....३६
३०.कलप लता के किधौं पल्लव.....८
३१.काम सरसी सी रमा उमा दरसी सी पट.....२७
३२.काहू कों सरन संभु.....७
३३.कीरति किसोरी वृषभान की दुलारी राधा ४९
३४.केसर अगर खस चन्दन लगायो भौन.....३५
३५.केसर के अङ्ग पट केसर के रंग जगे.....२०

३६.केसर सी केतकी सी चम्पक चमीकर सी.....२४
३७.कोऊ उमाराज रमाराज.....९
३८.कोऊ छत्र लीनै कोऊ छाहगीर कीनै कोऊ.....१८
३९.कोऊ धन धाम कोऊ.....१०
४०.कोमल विमल मंजु कंज से.....८
४१.कौल तें मुलामै कौन छवि कमला में तुलै.....४२
४२.कौलसे करन नव दलन सम्हारी सेज.....३९
४३.खासे खासे खसखाने छिरके गुलाब आब.....३०
४४.खासो खस चन्दन गुलाब छिरकायो जैसी.....३६
४५.गति पै गयन्द-वारौं पग अरविन्द वारौं.....४८
४६.गाय उठीं किंनरी नरीन ये सुरन सबै.....२४
४७.गिरपति लागी मेरु मेरुपति लागी भूमि.....४७
४८.गिरि कीजे गोधन मयूर नब कुँजन को.....५०
४९.चन्द की कलासी नवलासी सखी संग बारौं.....२८
५०.चन्दन लिपायो चौक चाँदनी चँदोवै तामै.....१५
५१.चाँदनी के आँगन बिछौना नीके चाँदनी के.....४२
५२.चाँदनी के चौक बैठी चाँदनी के आभरन.....४८
५३.चाँदनी में चाँदे लग्यो चाँदनी चँदोबा चारु.....१३
५४.चामीकर चौकी पर चंपक बरन हठी.....१७
५५.चौक परी मुखन समोई लेत सासन को.....५०
५६.जन दुःखहरनी धरैनी यति ध्यावें तोहि.....२९
५७.जब तैं बिलोक्यौ तोहि सुन्दर कुँवर कान्ह.....३१
५८.जरीदार सान वारे छरीदार ठाढ़े द्वारे.....१७

५९.जाके अङ्ग अङ्ग की बनक पै कनक वारै.....२५
६०.जाकौं नेति नेति कहि बेदन बखानै भेद.....३२
६१.जातरूप तखत पै बैठी रूपरासि राधे.....१९
६२.जातरूप तखत पैं बखत बिलंद बैठी.....१६
६३.झूमि झूमि आये घूम घने घनश्याम आली.....४०
६४.तोरि तोरि सुमन सुहाये सुख हेत हिये.....२२
६५.देखी भटू भाँवती प्रकास भौर भान कैसौ.....२५
६६.ध्यावत महेश हूँ गनेश हूँ धनेश हूँ.....३०
६७.पाइजेब जेहर जराऊ जरी जोरी हठी.....२२
६८.पियहितकारी छीरफैन सी सम्हारी सेज.....३८
६९.प्रेम की झरी सी देखो लालन लरीसी अब.....२८
७०.प्रेम सरसानी जस गांवै वेद बानी चौर.....३८
७१.फटिक सिलान के महल महारानी बैठी.....१८
७२.फिरत कहाँ है बीर बावरी भई सी तोहि.....४०
७३.बजत बधाए गाए मंगल सुहाग मग.....२३
७४.बिज्जु की छटा सी खासी कञ्चन सटा*सी रूरीं.....१६
७५.बैठी कुँज भौन महारानी सुखदानी सबै.....३३
७६.बैठी कुञ्जभौन गोरी कीरति किसोरी राधे.....२७
७७.बैठी रंग भरी है रङ्गीली रङ्ग रावटी में.....१५
७८.बैठी है निकुञ्ज राधे फैलत प्रभा के पुञ्ज.....४५
७९.मखमल माखन से.....९
८०.मखमली गिलम गलीचन की पाँति चारु.....१३
८१.मनिन अटा पै ठाढ़ी पुरट पटा पै प्यारी.....४९

८२.मनिन की कोर वारे जरकसी डोर वारे.....३७
८३.मनिन महल महँ महके सुगंधे तेसो.....२६
८४.मनिमय राजै साजै मंजु सुरवान बीच.....२१
८५.मान करि बैठी वृषभान की कुँवरि कुँज.....३४
८६.मोतिन की झूलैं झूमैं झालरै झमकदार.....२३
८७.मोतिन की तोरनै तामासेदार द्वारै वारै.....११
८८.रमा को कहा है रति रम्भा को कहा है ए.....४७
८९.रमा सी उमा सी इन्दुमा सी कीसमा सी हठी.....३४
९०.रम्भा को रमा को इन्दुमा को औ तिलोतमा को.....४३
९१.राजै सुभ सीस उतै मुकुट लटक वारो.....४१
९२.रुक्मिनी सी रति सी सची सी सत्यभामा सी तू.....४६
९३.संभु सुर ध्यावैं सदा सेस गुन गावै बिधि.....३१
९४.सांझ हौं गई तो वीर भोंन वृषभान जू के.....२०
९५.सारी जरतारी लगी मनिन किनारी त्योंही.....२१
९६. सारी जरतारी लगी मनिन किनारी दुति.....१४
९७.सीतल सुगन्ध सान सीतल महल जान.....३९
९८.सीसा के महल बैठी फैलत प्रभा के पुञ्ज.....१९
९९.सुर रखवारी सुरराज रखवारी सुक.....४४
१००. सोइ जगी सुखन समोई सुखदान राधे.....३५
१०१. सोहै सुररानी ब्रजरानी के समीप हठी.....४३
१०२. हीन हौं अधीन हौं तिहारो ब्रजसाहिबनी.....२९
१०३. हीरन के हार हिये मोतिन सिंगार किये.....४५

श्री राधा

श्रीराधासुधाशतक

दोहा

श्री वृषभानुकुमारि के पग बन्दौं कर जोर ।
जे निसि बासर उर धरैं ब्रज बसि नन्दकिशोर ॥१॥

कीरति कीरतिकुँवरि की कहि कहि थके गनेस ।
दस-सत-मुख बरनन करत पार न पावत सेस ॥२॥

अज-सिव-सिद्ध सुरेस मुख जपत रहत निसि जाम ।
बाधा जन की हरत है राधा राधा नाम ॥३॥

राधा राधा जे कहैं ते न परैं भव फंद ।
जासु कन्ध पर कमल कर धरे रहत ब्रजचन्द ॥४॥

राधा राधा कहत हैं जे नर आठौं जाम ।
ते भव सिन्धु उलंघि के बसत सदा ब्रज धाम ॥५॥

बन्दौं पग पङ्कज सदा नंदनन्दन ब्रजचन्द ।
राधासत बरनन करत फिर न परौं भव-फन्द ॥६॥

नित्य किशोर निकुंज बन ग्रह गोकुल गोओक ।
छिन बिछुरत नाहिंन दुवो विचरत श्री गोलोक ॥७॥

सेवत ललितादिक सखी जे प्रिय परम प्रवीन ।
कोटि-कोटि छवि आगरी सुर मुनि बरनन कीन ॥८॥

गुरुपद हिय में धारि कै सुमृत वेद परमान ।
'हठी' कछू बरनन करत राधा रूप निधान ॥९॥

रिषिसुदेववसु ससि सहित निरमल मधु कों पाय ।
माधव तृतीयाभृगु निरखि रच्यो ग्रन्थ सुखदाय ॥१०॥

सत कवित्त मोदक सहित सुधा सार इन माहिं ।
रसिक अमर ते लहत हैं ब्रज कदम्ब की छाहिं ॥११॥

सवैया

१

परी रहै वैर परोसिनै पै ननदी उर साल सौ सालहि री ।
बस बास बुरो व्रज को सजनी हठी क्यों लखिये सुख जालहि री ॥
बड़ी आँखिन मोरकी पांखिन को तूमिलाव वहै प्रति पालहि री ।
अब मेटौ वियोग बिथा तनकी भरि कै भुज भेंटों गुपालहि री ॥

२

कर कञ्जन जावक दै रुचि सौं बिछिया सजि कै व्रज माड़िलीके।
मखतूल गुहे घुँघुरू पहिराय छला छिगुनी चित चाड़िली के ॥
पगजेवै जराब जलूसन की, रवि की किरनै छबि छाड़िली के।
जग बन्दत है जिनको सिगरो पग बन्दत कीरति लाड़िली के॥

३

मंजन चीर सु हार हिये सिर बन्दन अंजन मोतिन वान की।
जावक नूपुर माल औ किङ्कन कंचुकी चंदन है गतियान की॥
कङ्कन सौ है केयूर भुजान लसै मुख पान ओ बेनी गुथान की।
आवै गली में बिलोकी चली यह कंज कली सी लली वृषभानकी॥

४

हेलीरी तैं लखे आजु के ख्याल बखान कहाँ लौं करै मति मोरी।
राधे के सीस पै मोर पखा मुरली लकुटी कटि में पट डोरी॥

बेंदी बिराजत लाल के भाल में चूनरी रंग कुसुंभ में बोरी।
मान कै मोहन बैठि रहे सो मनावत श्रीवृषभान किसोरी॥

५

मोर पखा गरे गुञ्ज की माल करै नव बेष बड़ी छबि छाई ।
पीत पटी दुपटी कटि में लपटी लकुटी हठी मो मन भाई॥
छूटी लटैं डुलै कुण्डल कान बजै मुरली धुनि मंद सुहाई ।
कोटिन काम गुलाम भये जब कान्ह ह्वै भानुलली बनि आई॥

६

भौन तैं गोन कैं भानुलली कढ़ि देखन आई सबै ब्रज नारैं।
पीरो दुकूल सिंगार सजै मनो फूल रहीं बन चम्पक डारैं॥
पाइन तैं अँगुरी नख व्है हठी लाली की लीकै कढ़ी असरारैं।
मैली भई उपमा सिगरी मनौ फैली महीं में महावर धारैं॥

७

नवनीत गुलाब तैं कोमल हैं हठी कंज की मंजुलता इन में।
गुललाला गुलाल प्रवाल जपा छवि ऐसी न देखी ललाइन में॥
मुनि मानस मन्दिर मध्य बसें बस होत है सूधे सुभाइन में।
रहु रे मन तूं चित चाइन सौं वृषभान कुमारि के पाइन में॥

८

हीरन के हठी हार गरै गजरा गज मोतिन के सुखदानी।
जोरे जरी भरी मांग सिन्दूर सु रम्भा रमा रति रूप नसानी॥

पन्ना प्रबालन लालन की पसरी किरनै सुखमा सरसानी।
को है त्रिलोक में मोहै नहीं लखि सोहै सुहागिन राधिकारानी॥

९

लीने लली ललतादिक सङ्ग उमङ्ग सौं श्री वृषभानुदुलारी।
मालती कुंद निवारी गुलाब सु फूल रही चहुँ धा फुलबारी॥
हेम के छूटे फुहारे हठी मघवा मध मेघ महा सहकारी।
हौज पै चौज सों मौज भरी बलि बैठी विलोकत राधिकाप्यारी॥

१०

राधिके काहे करो हठ री सुनरी बर बोल पियूष से पी के ।
भौंहैं चढ़ाय कहा सतराइ कै नैन नचाय बकै गुन सीके ।
संभु सुरेश गनेश न पावत प्रेम के डोरे बँधे तुब ही के ।
मानो मनायो पराऊँ परे मन भावन मोहन भावते जी के ॥

११

माखन तैं मखतूलहू तैं सुकुमार सिरोमन कञ्ज कली के ।
लाल गुलाल प्रवाल के भूषन दूषन हें घनश्याम छली के ॥
आली गुलाब की आबहि वारिये चारिये ये ब्रजकुञ्ज थली के ।
भानु प्रताप कौ निंदित है पद बंदत हौं वृषभानलली के ॥

श्री राधा

१२

ब्रज की बलि आजु निकुञ्जन में सुखपुञ्जन कौं बरसावत है ।
तिय को भरो आलस सों मुखचन्द निहार घनौ सुख पावत है ॥
इक बात मते की कहौं सुन तूं जु सुनै हिय में हँसी आवत है ।
करि केलि थकी लखि प्रान पिया पग चांपत प्यारी सुवावत है ॥

१३

चंद सो आनन कंचन से तन हौं लखि कै बिन मोल बिकानी ।
औ अरविंद सी आँखिन कौं हठि देखत मेरी ये आँख सिरानी ॥
राजत है मनमोहन के संग बारौं मैं कोटि रमा रति बानी।
जीवन मूर सबै ब्रज की ठकुरानी हमारी है राधिकारानी ॥

१४

रम्भा रमासी उमासी हठी बिमला नवला रति रूप छली सी।
चाँदनी चम्पा चमीकर सी चपला चमकाहत जात घली सी॥
भागन आज लखी भरि नैनन आवरी आवत देखि भली सी ।
जात चली गली भानुलली अली मंजुल कोमल कंज कली सी॥

१५

जाकी कृपा सुक ग्यानी भये अति दानीऔ ध्यानी भये त्रिपुरारी।
जाकी कृपा विधि वेद रचे भये ब्यास पुरानन के अधिकारी ॥

जाकी कृपा से त्रिलोक धनी सु कहावत श्री ब्रजचन्द् बिहारी ।
लोक घटी तै हठी को बचाउ कृपा करि श्रीवृषभानदुलारी ॥

१६

बड़ोई प्रताप बड़ोई सुहाग बड़ोई प्रभाव सुभाविक राखै।
बड़ी गुनमान बड़ी यै भुजान सरूप निधान पुरानन भाखै॥
बड़े बड़े देव दिबेसन की घरनी मुख देखन को अभिलाखै।
बड़ी दिलदार बड़े बड़े हार बड़े बड़े बार बड़ी बड़ी आँखैं॥

कवित्त

१७

काहू कों सरन संभु गिरजा गनेश सेस,
काहू को सरन है कुवेर ऐसे धोरी को ।
काहू को सरन मच्छ कच्छ बलिराम राम,
काहू को सरन गोरी सांवरी सी जोरी को ॥
काहू कों सरन बौद्ध बावन बराह व्यास,
येही निरधार सदा रहै मति मोरी को ।
आनंद करन विधि वन्दित चरन एक,
हठी को सरन वृषभान की किसोरी को ॥

१८

कलप लता के किधौं पल्लव नवीन दोऊ,
हरन मंजु ताके कंज ताके बनिता के हैं ।
पावन पतित गुन गावें मुनि ताके छबि,
छलै सविता के जनता के गुरुता के हैं ॥
नऊनिधि ताके सिद्धता के आदि आलै हठी,
तीनों लोक ताके प्रभुता के प्रभु ताके हैं ।
कटैं पाप ताके बढ़ैं पुन्य के पताके,
जिन ऐसे पद ताके वृषभानु की सुता के हैं ॥

१९

कोमल विमल मंजु कंज से अरुन सोहैं,
लच्छन समेत शुभ सुद्ध कन्दनी के हैं ।
हरी के मनालय निरालय निकारन के,
भक्ति बरदायक बखानैं छन्दनी के हैं ॥
ध्यावत सुरेस संभु सेस औ गनेश खुले,
भाग अवनी के जहाँ मन्द परै नीके हैं ।
कटै जम फन्दनीय द्वंद्वनीय हर हरि,
वन्दनी चरन वृषभानु नन्दनी के हैं ॥

२०

मखमल माखन से इन्दु की मयूखन से,
नूतन तमाल पत्र आभा आभरन हैं ।
गुल से गुलाल से गुजाब जपा जावक से,
पावक प्रवाल लाल गावै भू धरन हैं ॥
उमापति रमापति जमापति आठौ जाम,
ध्यावत रहत चार फल के फरन हैं ।
पङ्कज वरन छबि-छबि के हरन हठी,
सुख के करन राधे रावरे चरन हैं ॥

२१

कोऊ उमाराज रमाराज जमाराज कोऊ,
कोऊ रामचन्द्र सुखकन्द नाम नाधे में ।
कोऊ ध्यावै गनपति फनपति सुरपति,
कोऊ देव ध्याय फल लेत पल आधे में ।
हठी को अधार निरधार को अधार तू ही,
जप तप जोग जग्य कछुवै न साधे मैं ।
कटैं कोटि बाधे मुनि धरत समाधे ऐसे,
राधे पद रावरे सदाहीं अवराधे मैं ॥

२२

कोऊ धन धाम कोऊ चाहै अभिराम कोऊ,
साहिबी सुरेस भाँति लाख लहियतु है ।
कोऊ गजराज महाराज सुखराज कोऊ,
तीर्थ व्रत नेम जग अङ्ग दाहियतु है ॥
ऐसी चित चाहै चरचा है दुनियाँ की हठी,
चाहै ह्वदै एक तौ न ठीक ठाहियतु है ।
जन रखवारी की सु प्रभु प्रानप्यारी की,
सु कीरति दुलारी की नजर चाहियतु है ॥

२३

अतर पुतायौ मढ्यौ महल सुगन्धन सौं
द्वारै गज मोतिन की तोरनै तनी रहै ।
चन्दन महल चारु चाँदनी चँदोवा लाल,
गोपमाल मनी कनी कोरनै घनी रहै ॥
उमा चौर ढारै रमा आरती उतारै ठाढ़ी,
रंभा रति मैनका-सी कोटिन जनी रहै।
हठी देवतान की दिमाकदार रानी तेऊ,
राधे महारानी जू के हाजिर बनी रहै ॥

२४

मोतिन की तोरनै तामासेदार द्वारै वारै,
अमित तरैयन की सोभा बड़ी सान की।
मखमली गिलम गलीचा मखतूलन के,
अतर अतूलन की झौंक हठी मान की ॥
जरकसी जरब जलूसन की गद्दी कर,
रवि छबि रही झुकी झालर बितान की ।
कञ्चन की बेली रमा रति ते नवेली,
अलबेली रंग रावटी अकेली वृषभान की ॥

२५

अतर पुतायौ चौक चंदन लिपायो बिछी,
गिलम गलीचन की पंगति प्रमान की ।
कारी हरी पीरी लाल झालरै झलक रही,
जैसी छबिछाई चारु चाँदनी बितान की ॥
झीनी सेत सारी जड़ी मोतिन किनारीदार,
फैली मुख आभा हठी राधे सुखदान की ।
नाह नेह नद्दी कर रमा रूप रद्दी कर,
बैठी आन गद्दी पर बेटी बृषभान की ॥

२६

कञ्चन फरस फैली मनिन मयूखै तन्यौ,
जरी को बितान तेज तरनि तरा परै।
पाँवड़े बिछौना परे मोतिन के कोरवारे,
चारयौ ओर जोर जो प्रभा भरी भरा परै॥
हीरन तखत बैठी राधे महारानी हठी,
रंभा रति रूप गिरि धसकी धरा परै ।
छूटी मुखचंद चारु किरन कतार बाँध,
छै छै चन्द्र मण्डल लौं छबि के छरा परैं॥

२७

कञ्चन महल चाँदैं चाँदनी बिछौना हठी,
गावतीं प्रबीनै बीनै लीनै मृदु पान में ।
रमा तृन तोरै उमा ठाढ़ी कर जोरै,
सची सीस चौर ढोरैं राधे सोवै सुखसान में ॥
मनिन की मालन की पन्नन प्रवालन की,
मञ्जुल मयूखै भूखै कोंटिन प्रभान में ।
जरकसी सारी अङ्ग-भूषन जराऊ बैठी,
जरकसी सेज जरकस के बितान में ॥

२८

चाँदनी में चाँदे लग्यो चाँदनी चँदोबा चारु,
चाँदनी बिछौनन अधिक छबि छाई है।
बड़े-बड़े मौतिन की लरैं रुरैं चार्‌यो ओर,
बीच-बीच जरी कोर सोहत सुहाई है॥
गोरे गात सेत सारी हीरन किनारी घनी,
इन्दु से बदन राधे इन्दिरा लजाई है।
भाल दिये चन्दन सुनेह नन्दनन्दन सों,
महक सुगन्धन सों सेज पर आई है॥

२९

मखमली गिलम गलीचन की पाँति चारु,
जरकसी सेज तैसी रही छबि छाइ कै।
हीरन के मनिन के मोती मालती के हार,
लालन प्रवालन की लावती बनाइ कै॥
एकै लिये सारी जरतारी कोनी कोरवारी,
एकै हठी बीन लै रिझावें गीत गाइ कै।
चन्दन चढ़ाय भाल बन्दन लगाइ राधे,
बैठी मन्द मन्द कै मसिन्द पर आइ कै॥

३०

कञ्चन महल चौक चाँदनी बिछौना तामैं,
जरी को बितान तान भान जोति मन्द की।
लालन की मालें लाल सारी कोरदार अङ्ग,
ओठन की लाली जिमि लाली जीवनन्द की ॥
रम्भासी रमासी खासी दासी मैंनका सी हठी,
ठाड़ी कर जोरै तेऊ छीनै जोति चन्द की ।
गावै बेदबानी चौंर ढारत भवानी राधे,
बैठी सुख दानी महारानी नँदनन्द की ॥

३१

सारी जरतारी लगी मनिन किनारी दुति,
दामिनी कहा री गात जातरूप* कन्द है।
हार हियैं भूषन जराऊ भाल बैंदी लाल,
अधर प्रवाल बिम्ब बसै जीवबन्द है।
उमा की रमा की सुखमाकी देवमा की हठी,
रम्भा इन्दुमा सी उपमा सी गति मन्द है।
तारापति कैसी मुख लहत गुबिन्द वारी,
तखत पैं बैठी राधे बखत बिलन्द है॥

३२

चन्दन लिपायो चौक चाँदनी चँदोवै तामै,
चाँदनी बिछोना फैली लहर सुगन्ध की ।
चाँदनी की साज नीकी चन्दन सम चमकन,
चार्‌यौ ओर चंदमुखी चंद जोति मंद की॥
चाँदकी सी चार चारु चाँदनी सी फैली हठी,
चाँदनी सी हाँसी कै मिठाई सुधा कंद की।
चंदन की चौकी बैठी चंदन लगाए भाल,
चंद से बदन राधे रानी व्रजचंद की॥

३३

बैठी रंग भरी है रङ्गीली रङ्ग रावटी में,
कहाँ लों बखानौं सुंदराई सिरताज की।
चाँदनी की चम्पक की चञ्चला चमीकर की,
इंदमा तिलोत्तमा की सोभा कौन काज की ॥
मोतिन के हार गले मोतिन सों माँग भरैं,
मोतिन सों बैंन गुही हठी सुखसाज की ॥
चाल गजराज मृगराज की सी लङ्क दुज,
राज सो बदन राजै रानी ब्रजराज की॥

३४

जातरूप तखत पैं बखत बिलंद बैठी,
जाके काज ब्रजराज भाबरे भरत हैं।
जरीदार द्वार में वितान तान राख्यौ हठी,
छरीदार ठाढ़े इतमाम बगरत हैं॥
लरीदार झालरैं झलकदार झूमैं मोती,
झुमकन झूमैं छ्वै छ्वै उपमा धरत हैं।
राधे को बदन दुजराज महाराज जान,
तखत समान कोरनिस सी करत हैं ॥

३५

बिज्जु की छटा सी खासी कञ्चन सटा*सी रूरीं,
रूप की घटा सी सखी सेवन मैं आवतीं ।
सुरन की रानी लै सुगन्धन लगावैं रुचि,
चौरन चलाइ भौंर भीरन भगावतीं॥
फूल ऐसी राजै मखतूल सेज राधे हठी,
फूल फूल किन्नरी सुहाये गीत गावतीं।
मण्ड नवखण्ड मुख मण्डल मरीचैं दाब,
मण्ड कै प्रचण्ड चन्द्र मण्डल दबावतीं॥

३६

चामीकर चौकी पर चंपक बरन हठी,
अङ्ग की चमँकै चारु चंचलै चलावतीं।
तारा सी तरङ्गना सी अतर लगावै रति,
मुकर दिखावै बिजै बीजन डुलावतीं॥
कमला करन जौरैं विमला सुतृन तौरैं,
नवला लै मरजीकों अरजी सुनावतीं।
सुरन की रानी सुरपालन की रानी,
दिगपालन की रानी हार मुजरा न पावतीं॥

३७

जरीदार सान वारे छरीदार ठाढ़े द्वारे,
बन्दीजन जसभरी बोलैं बेद बानी हैं।
चार्‌यौ ओर चंद्रमा सी जगमग होत बाल,
देखौ नन्दलाल रति छबि की निसानी है।
रम्भा गुन गावै सची चन्दन लगावै रमा,
भौंरन उड़ावैं चौंर ढारत भवानी हैं।
हठी ब्रजमण्डल में रूप बगराय आज,
बैठी जात रूप के महल महारानी है ॥

३८

कोऊ छत्र लीनै कोऊ छाहगीर कीनै कोऊ,
बीनै ले प्रवीनै ये नवीनें सुर गावती ।
कोऊ जरी जोरै कर अतर गुलाब बोरै,
लै लै अलबेली हठी धावन तैं आवती॥
कोऊ चौर ढारै कोऊ आरती उतारै कोऊ,
करती सलामें कोऊ मुजरा न पावतीं।
बैठी आन तखत पै बखत बिलंद राधे,
बाला दिगपालन की माला पहिरावतीं॥

३९

फटिक सिलान के महल महारानी बैठी,
सुरन की रानीं जुरि आई मन भावतीं॥
कोऊ जलदानी पानदानी पीकदानी लिये,
कोऊ कर बीनै लै सुहाये गीत गावतीं॥
कोऊ चीर चीनै चारु चाँदनी से चौज वारे,
हठी लै सुगन्धन सौं अलकैं बनावतीं।
मोतिन के मनिन के पन्नन प्रबालन के,
लालन के हीरन के हार पहिरावतीं॥

४०

जातरूप तखत पै बैठी रूपरासि राधे,
अङ्गन की प्रभा प्रभाकर को लजावतीं।
चीर चारु हीर हार हीय पहिराय कर,
भूषन बनाय बाल साजन सजावतीं।
अतर गुलाब लै सुगन्धन लगावै सबै,
चन्दन चढ़ाय भाल भौंरन भगावतीं।
जोरि जोरि पानि देवतान हूँ की रानी हठी,
कोटि कोटि कोरनिस झुकि कै बजावतीं॥

४१

सीसा के महल बैठी फैलत प्रभा के पुञ्ज,
मानो चन्द्रमण्डल उठाय आनि राख्यौ है।
जरीपोस अम्बर जलूसदार झलझलात,
झालरैं झलक झल रूप मानि राख्यौ है॥
अतर उसीर अङ्ग अङ्गन लगाय हठी,
सकल सुगन्धन सौं ब्रज सानि राख्यौ है।
देखौ भरि नैन जासौ पूजै मन साधा हरि,
राधा आजु छबि को बितान तानि राख्यौ है॥

४२

केसर के अङ्ग पट केसर के रंग जगे,
मोती गुही मंग है अनंग हूँ की बालिका।
रम्भा सी रमा सी मैनका सी मञ्जुघोषा सम,
सची सी उमा सी सुखमा सी जोति जालिका॥
सांझ समैं आन वृषभानु की कुमारी राधा,
ठाढ़ी दरबाजे हठी प्रानन की पालिका।
भाग भरे नैनन निहारी नन्दलाल चलि,
रैन गुजरी सी उजरी सी दीपमालिका॥

४३

सांझ हौं गई तो वीर भोंन वृषभान जू के,
अति सुकुमार एक रूप कैसी रासी है।
दाड़िम दसन बिम्ब अधर प्रवाल वारी,
सुधा सी झरत चारु मन्द मन्द हासी है॥
देखिहौं गुपाल-ग्वाल आज गरबीली हठी,
राधे कहि टेरैं जानी रम्भा रमा दासी हैं।
हिमकर कला सी है कै चमक चपला सी है सो,
संभु अबलासी खासी दीप मालिकासी है॥

४४

सारी जरतारी लगी मनिन किनारी त्योंही,
दामिनी दवाई लेत दमक रदन की।
हीरन के हार हठी गजरा गुहावदार,
अंग अंग फैल रही दीपति मदन की।
हेम की छरी सी मानौ मुखन जराव जरी,
सब गुण भरी परी छवि के कदन की।
चाँदनी बिछौना भाल चंदन लगावै बाल,
चाँदनी में बैठी लाल चंद से बदन की॥

४५

मनिमय राजै साजै मंजु सुरवान बीच,
मानौ दिनकर कर लपटी प्रभा करै ।
सौंनजुही मालै सी बिसालै बिजुरी सी जुरी,
इन ही को ध्यान निस बासर रमा करै।
मुनिन के मन के मनोरथ की सु दैन वारी,
हेर हेर हठी पाप पाइँ तें बिदा करै।
साकरै परै ते राधे साकरै सुहाई होत,
साकरै सहाय ऐसी जन की निसा करै ॥

४६

पाइजेब जेहर जराऊ जरी जोरी हठी,
मनि मुकतान हीरा हार उर धारे हैं।
सल्लन समुद्र कढ़ी रमा रमनीय ऐसी,
अंङ्गन सुगन्ध पाइ झूमै भौंर भारे हैं॥
बैठी है तखत खोल बखत पियारे जू को,
मानो काम बाम पै सुहाग चौंर ढारे हैं।
दैकै मृगबिन्द कीन्ही जौंन्ह जोति मंद राधे,
तेरे मुखचन्द पै अनेक चन्द वारे हैं ॥

४७

तोरि तोरि सुमन सुहाये सुख हेत हिये,
हार मालती के पहराये हैं सरस में ।
चन्द्रकला प्रेमकला बिमल बिसाखा के,
बिमल गुन गाय गाय भयो हूँ परस में ॥
केसर अतर अंग अगर लगाय हठी,
ऐसी भाँति सेवा करी कैयक बरस में।
ललिता लली के लौने पाय सहराये तब,
पाए वर पाइ पाइ राधिका दरस में॥

४८

मोतिन की झूलैं झूमैं झालरै झमकदार,
चाँदनी बिछौना बिछै चन्दन कदोबा में।
अतर गुलाब खस-खसन बिसाल बोरे,
सकल सुगन्ध हठी अङ्गन सदोवा में॥
सुन्दर सुजान है सुघर सुकुमार राधा,
मन मनमोहन जू रहतु बदोबा मैं।
चाँदनी सिंगार करैं चंद-गुन चौकी पर,
चन्द्रमा सी बैठी चारु चाँदनी चँदोवा में॥

४९

बजत बधाए गाए मंगल सुहाग मग,
पाँवड़े पराये हैं अवाई सुख बान की।
बैठी सुखपाल सुखपालन की रानी साथ,
ब्रज महारानी के प्रगट जग जान की ॥
बोल के पठाई आई नगर लुगाई सब,
देखि छबि छाई जिन्हें सूझत न आन की।
मनहर भाई हठी कुलह सुहाई ऐसी,
गोकुलहि आई राधे बेटी वृषभान की॥

५०

केसर सी केतकी सी चम्पक चमीकर सी,
चपला चमक चारु गात की गुराई है।
जाको मुखचन्द देख चन्द मन्द जोति होत,
जाके लखि नैन अरविंद दुति पाई है॥
नीलमनि मोतिन की माल उर डोलत,
मयूर औ मरालन की पंगति सुहाई है।
देखबे को दौरि आईं गोरी व्रजबाला सबै,
भानु की किशोरी आजु नन्द गृह आई है॥

५१

गाय उठीं किंनरी नरीन ये सुरन सबै,
द्वार द्वार नगर नगारा धुनि छाई है।
सुर हरखाने दरसाने बरसाने प्रेम,
सरसाने फूल बरखा लै बरसाई है॥
बन्दीजन बिरद बखानैं भाँति-भाँति हठी,
लीन्हो अवतार राधे वेदन हूँ गाई है।
धन्य ब्रजमण्डल सु धन्य कूख कीरति की,
धन्य वृषभान जू के भाग की भलाई है॥

५२

देखी भटू भाँवती प्रकास भौर भान कैसौ,
कोकिला से वैन नैन ऐनन जुरै गई।
मैनका सी नारी हठी मैनका कहारी प्यारी,
रम्भा रमा उमावारी मन कौं भुरै गई।
कमल कली सी लली राजत अलीन बीच,
गोकुल गलीन में गुलाब सौ कुरै गई।
बिज्जुल के जालन की कोटिन मसालन की,
लालन की मालन की दीपति दुरै गई॥

५३

जाके अङ्ग अङ्ग की बनक पै कनक वारै,
मोहै लेत मैन मन मोतिन के हारिए।
ऐसी मन भावनी सौ मोहन जू कीनौ मान,
जाकी ये बड़ाई विधि गावै वेद चारिए॥
राधे जू को बदन बिलोको ब्रजचन्द हठी,
चन्द जोति मंद नंद नंद पाइ धारिए।
सची मंजु घोष सी सु मैनका तिलोतमा सी,
रम्भा सिवा रति सी रमा सी वारि डारिए॥

५४

अतर पुतायो बाने खासे खसखाने तामै,
छींटे चहूँ ओरन उसीरन के आब के।
कंजन बिछौना जामे गुंजै अलि-छौना हठी,
श्रौनन के तौना सौहैं सुरन रबाब के॥
छूटत फुहारे कासमीर रङ्गवारे भारे,
बँधे हैं कतारे मघा मेघ झरदाब के।
देखो ब्रजचंद जगबंद चंद मंद होत,
चंदन महल राधे महल गुलाब के॥

५५

मनिन महल महँ महके सुगंधे तेसो,
फटिक सिलान हूँ कौ फरस समारो है।
जेबदार जर्बदार जरी औ जलूसदार,
चोजदार बिसद बिछौनन पसारो है॥
चन्द्रमन चौकी पर चम्पक बरन हठी,
रम्भा रमा उमा रूप गरब उतारो है।
देखो नन्दनन्द सुख-कंद ब्रजचन्द आजु,
राधे मुखचन्द चन्द मन्द कर डारो है॥

५६

बैठी कुञ्जभौन गोरी कीरति किसोरी राधे,
छूटत फुहारे हिमवारे एक पाती है।
अतर गुलाब घिस चन्दन चहल मची,
चारों ओर सुमन सुगन्ध सरसाती है॥
कैयो रङ्गवारी हठी उठतीं तरंगैं त्यों,
अनन्त अंगना सी अङ्ग आभा उफनाती है।
बाँधि-बाँधि परा सरासरी मुख किरनैं यों,
छोर लौं धरा पै छूट छरा खाय जाती है॥

५७

काम सरसी सी रमा उमा दरसी सी पट,
फूल अरसी सी घन दामिन उसी सी है।
प्रेम झरसी सी मोह कसन कसीसी लोक,
लज्जा उकसीसी कान्ह रूप मैं रसी सी है॥
लरी लरसी सी कटि राजै हरिसीसी हठी,
उर में बसी सी दुति जग में जसी सी है।
सिद्धिकर सीसी हिए अँगन ससीसी करै,
रति की हँसी सी दीसी उर में बसीसी है॥

५८

प्रेम की झरी सी देखो लालन लरीसी अब,
चाल में करी सी राजै कटि में हरीसी है।
भाग में भरीसी वा सुहाग अगरीसी रास,
रूप की धरीसी रमा उमा किन्नरी सी है॥
नीति अगरी सी ब्रज जोन्हि बगरी सी हठी,
चलिए गुपाल लाल सोहै सुघरी सी है।
दिपति परी सी है लसत सुरसरी सी है,
हेम की छरी सी है सदन की बरीसी है॥

५९

चन्द की कलासी नवलासी सखी संग बारौं,
रम्भा रमा उमा हठी उपमा कों को रही।
कीरति किशोरी वृषभान की दुलारी राधा,
आली बनमाली को सहज चित्त चोरही॥
भौन ते निकसि प्यारी पाय धारे बाहिर लौं,
लाली तरवान की उमड़ि इक ओरही।
बगर बसर अरु डगर डगर वर,
जगर मगर चारों और दुति हो रही॥

६०

हीन हौं अधीन हौं तिहारो ब्रजसाहिबनी,
हिये में मलीन करुना की ओर ढरिये।
भारी भवसागर में बौरत बरैहू मोहि,
काम क्रोध लोभ मोह लागे सब अरि ये॥
बुरो भलो जैसो तैसो तेरे द्वार पर्‌यौ मैं तो,
मेरे गुन औगुन तैं मन में न धरिये।
कीरतिकिसोरी वृषभान की दुहाई तोहि,
लच्छ लच्छ भाँति सों हठी की पच्छ करिये॥

६१

जन दुःखहरनी धरैनी यति ध्यावें तोहि,
तेरी जग कर्नी विधि बर्नी बड़े स्यान की।
चिन्ता कैसो घेरा मन ढेरा सौ भ्रमत फिरै,
ह्वदै नहीं डेरा सुधि खान की न पान की।
ध्यावत बनै न मोहि तेरोई कहावत हौं,
हठी पै कृपा की कोर राखि दया दान की।
औगुन भरोरी हौं कहत कर जोर अब,
मोरी पच्छ कर तू किसोरी वृषभान की॥

६२

ध्यावत महेश हूँ गनेश हूँ धनेश हूँ,
दिनेस हूँ फनेस त्यों मुनेस मन मानी है।
तीनों लोक जपत त्रिताप की हरन हार,
नवोनिद्धि सिद्धि मुक्ति भई दरवानी है॥
कीरति दुलारी सेवै चरन बिहारी धन्य,
जाकी कित्त नित्त विधि वेदन बखानी है।
साधा काज पल में अराधा छिन आधा हठी,
बाधा हरिवे कों एक राधा महारानी है॥

६३

खासे खासे खसखाने छिरके गुलाब आब,
चन्दन चहल चारु छाये जलजात हैं।
चाँदनी की सज नीकी पखुरी गुलाब ही की,
बिछे चार्‌यौ औरन पुरैनन के पात हैं॥
छूटत फुहारे हठी अमल सुजल बारे,
तैसी बहै मन्द बात सियरात गात हैं।
अतर लपेटे दोऊ सीतल महल बीच,
प्यारी प्राणनाथ पौंढ़े-सुख सरसात हैं॥

६४

जब तैं बिलोक्यौ तोहि सुन्दर कुँवर कान्ह,
तब ही तें बाको चित्त चंग सो चढ़त हैं।
डोलत फिरत नहीं खोलत हिये की पीर,
मेरी कर तेरी सौंह तो जस पढ़त हैं॥
तुम तौ सुघर स्यानी कहिये सबैई बात,
चलिये जरूर बैंठें कहो का कढ़त हैं।
मेटो मन बाधा हठी पूजै मन साधा वे तौ,
रातौ दिन राधा राधा राधा ही रटत हैं॥

६५

संभु सुर ध्यावैं सदा सेस गुन गावै बिधि,
पारहू न पावैं जे कहैया बेद बानी के।
परम पद पायकै चढ़ायवे कौं लायक हैं,
जन सुखदायक सहाय दधि दानी के॥
मुकति के मालिक अतालिक हैं सिद्धन के,
दीन प्रतिपालिक रखैया हठी पानी के।
जोग जज्ञ जप तप कछूवै न साधे ऐसे,
पद अवराधे हम राधे महारानी के॥

६६

जाकौं नेति नेति कहि बेदन बखानै भेद,
नारद न जाने नहीं काहू ठीक पारो है।
संभु सुर सुरपति सुक मुनि आदि दै कै,
करि जोग जग्य जप तप तन गारो है॥
हठी की अधार वृषभान की कुमारि ऐसी,
तीन लोक जाकी कृपा कोर को पसारो है।
चार मुख वारो बिधि कहै का बिचारो,
दससतमुख वारो राधा गुन कहि हारो है॥

६७

कंचन अटा पै बैठी जोवत घटा हैं प्यारी,
बिज्जु की छटा सी सखी सेवत सिहाती हैं।
लीन्है कर बीनै एकै गावती प्रवीनै हठी,
राग रागनींन के प्रमान दिखराती हैं॥
राधा मुख चंद की मरीचैं ब्रजचंद ए,
उमँड़कै प्रचंड ह्वै कै ऐसी सरसाती हैं॥
मंड खंड मंडल कौं दाबि कै अखंडल कौं,
फोर चंदमंडल कों छोर कढ़ि जाती हैं॥

६८

अगर लिपायौ चौक बगर सुगन्ध धुन्ध,
नगर-नगर फैल चार्‌यौ ओर हो रही।
पाँवरीन पाँवड़े पराये पौर बाहिर लौं,
दीपक धराये मन भाये मग जो रही॥
सकल सिंगार साज रावरेई पास हठी,
ऐसी भाँति भाँवती कौ भयौ भौन भोर ही।
आलस उनीदी दृग मूँदी चटकाइ कर,
सुन्दर सुघर सुकुमार सेज सो रही॥

६९

बैठी कुँज भौन महारानी सुखदानी सबै,
किन्नरी नरी नए सुरीन सुर गाबती।
कौरैं कौरैं कोंलसी सुवामै इन्दु आननसी,
प्रमुदित झूमि झूमि पग सहरावती॥
लै लै री सुगन्धै गुंजै धीरे धीरे प्यारी पर,
भौंरन की भीर हठी ऐसी छबि छाबती।
गोरे गोरे गातन पै नवल किसोरी जू के,
स्याम रंग बोरे मनो चौंरन चलाबती॥

७०

मान करि बैठी वृषभान की कुँवरि कुँज,
जानिये कहाधौं लखि पायो चिन्ह चोरी को।
कोटि कोटि भाँति मनुहार करि हारीं हम,
रुखहुँ न पायो नेक नवल किशोरी को॥
चलिये चतुर चटकीले चित चाव भरे,
बदन दिखाबौं हठी रतिपति जोरी को।
पायन घिसत सीस निश दिन बीतौ हरि,
फीको परि गयौ टीको भाल लाल रोरी को॥

७१

रमा सी उमा सी इन्दुमा सी कीसमा सी हठी,
छबि की जमा सी भाल दीन्है बिन्दु रोरी के।
तारा सी तरङ्गना सी मैंनका तिलोत्तमा सी,
सची मंजुघोषा गिरा गावैं गुन गोरी के॥
विमला सी नवला सी नव अबला सी खासी,
मदनबिलासी चन्द्रका सी तन जोरी के॥
छोड़ मगरूर जुरि आवतीं जरूर सबै,
रहतीं हजूर ठाढ़ी कीरतिकिसोरी के॥

७२

सोइ जगी सुखन समोई सुखदान राधे,
सौहै छवि दैनी बैनी लचकीली लङ्क पर।
आलस उनींदी अङ्गरात जमुहात प्रात,
छबि उफनात छुटी बेंदी भौंह बङ्क पर॥
कारी सटकारी चटकारी लटकारी लटैं,
सुलफ सुहाई सौहै बदन मयङ्क पर।
हठी तृन तोरही न उपमा करोर ही,
सु जगमग हो रही जराऊ परजङ्क पर॥

७३

केसर अगर खस चन्दन लगायो भौन,
अतर पुतायो भौ सुगन्ध चहुँ ओरी है ।
कञ्चन फरस मखमल के बिछौना बिछे,
जरी के बितान आसमान जनु जोरी है॥
आसपास चन्द्रमुखी बिञ्जन चँबर ढारैं,
लीनै पानदान कीनै रति दुति थोरी है ।
हठी सुखदान भरी रूप के गुमान आज,
स्यान कर बैठी वृषभान की किशोरी है॥

७४

खासो खस चन्दन गुलाब छिरकायो जैसी,
छाई चहूँ ओरन सुगन्ध कमलान की ।
मन्द मन्द बिजन डुलावैं ललतादि सखी,
कहती कहानी मृदुबानी सों प्रमान की ॥
कोमल करन चाँपैं चरन विसाखा हठी,
जगमग भूषन प्रभा ज्यौं सुखदान की ।
चाँदनी सी सेज चांदै चाँदनी बिछौना चारु,
सुखन समोई सोई बेटी वृषभान की ॥

७५

करन तरोना जगमगत जराऊ तापै,
दामिनी चमक चारु चपला बिसेखो तौ ।
सुन्दर सुघर मन मोहन सुजान हठी,
इन्दीवर लोचन सुफल कर लेखो तौ ॥
मोती गुहे मङ्ग मध्य तारा गङ्गधार किधौं,
भाग वा सुहाग की बनाई विधि रेखो तौ ।
मृगमद बिंद दीने कोटि चन्द मन्द कीनै,
राधे मुखचन्द ब्रजचन्द चलि देखो तौ ॥

७६

मनिन की कोर वारे जरकसी डोर वारे,
भौरवारे भानु की प्रभान करै फीके हैं।
ताने हैं बितान तामैं भानु की किसोरी बैठी,
रम्भा रति तीके रूप लगत रती के हैं॥
देखो ब्रजचन्द ब्रजरानी को बदन हठी,
फैले हैं अकास मानौ कोटिन ससी के हैं।
चार्‌यो ओर पुञ्ज जोर पसरे मयूखन के;
भूषन बिराजैं नीके नीके चाँदनी के हैं ।

७७

आजु हौं गई ती भौन भोर वृषभानुजू के,
रम्भा रति रमा उमा रूप अब देखी मैं ।
सुन्दर सुघर सुकुमार सुखदान हठी,
चामीकर चम्पक तैं अधिक बिसेखी मैं ॥
चटकीली चौंप भरी चाव धरै चाहत सी,
नैनन निहार घरी सुफल कै लेखी मैं ।
गोकुल गलीन बीच ग्वाल गरबीली जात,
चन्द से बदन ब्रजचन्द आज देखी मैं ॥

७८

प्रेम सरसानी जस गांवै वेद बानी चौर,
ढारै रमा रानी रति रानी सी टहल में ।
कञ्चन सम्हारी सेज मंजुल करन बेस,
चाँदनी बरन चारु चंदन चहल में ।
छूटत फुहारे हिम बारे हठी चारों ओर,
छिरको गुलाब आब ग्रीषम कहल में ।
भेंटी गुजरेटी अहिरेटी कान्ह भानु बेटी,
अतर लपेटी लेटी सीतल महल में ॥

७९

पियहितकारी छीरफैन सी सम्हारी सेज,
मैन मद वारी सोभा सोहत बदन में ।
मोतिन किनारी वारी हठी सेत सारी सीस,
कैयो दामिनी की दुति राजत रदन में ॥
कोटि सुखमा सी मंजुघोषा औ तिलोत्तमा सी,
रम्भा रति मैनका सी वारिये अदन में ।
सुख सरसानी कल कोकिल सी बानी सुर,
गावें सुररानी ब्रजरानी के सदन में ॥

८०

कौलसे करन नव दलन सम्हारी सेज,
सुखद सहेलिन सुगन्ध सौं समोई है ।
करिकै टहल गई आपने महल मैट,
चहल पहल हठी दूसरो ना कोई है ॥
सुखन सँजोई औ वियोग ताप खोई प्रीति,
सखियन गोई मैन मंत्रन सौ भोई है।
प्यारो भरे अङ्क और प्यारी गलबाही करै,
ऐसे भानुनन्दिनी गुविंद संग सोई है॥

८१

सीतल सुगन्ध सान सीतल महल जान,
ग्रीषम कहल कौल सेज सुखदान की ।
चन्दन चरचि अङ्ग पहिरे सुगन्ध चीर,
बीर बल बीरजू को प्यारी प्रिय प्रान की ॥
सुखद सहेली परवीन बीन लै लै हठी,
करि करि गान राग तानन बितान की ।
अतरन सीसे कर सुरत खुसीसै नाह,
बांह दै उसीसै लेटी बेटी वृषभान की॥

८२

फिरत कहाँ है बीर बावरी भई सी तोहि,
कौतुक दिखाऊँ चलि पैंड़े कुञ्ज द्वारी के ।
निमिष निहारै डीठ किंतहु न टारै मार,
नंद के कुमार मैन सैन सुकुमारी के ॥
करन पसार कर दृगन लगावै हठी,
बस परै गरबीली ग्वाल सुकुमारी के ।
आई देखि हौं हूँ औ दिखाऊँ तोहि चलि,
लाल चरन पलोटै वृषभान की कुमारी के ।

८३

झूमि झूमि आये घूम घने घनश्याम आली,
कूकै काकपाली कामपाली बरसात है ।
ऐसै सम कुञ्जभौन कीरतिकिसोरी तौन,
सखिन समूह साथ सुख सरसात है॥
कहा कहों तोहि ताहि देखि आई तैसे भटू,
कौतुक बिलोकि हठि हिय हरषात है ।
जमुना के तीर बहै सीतल समीर तहाँ,
वीर बलबीरजू को बलि बलि जात है ॥

८४

राजै सुभ सीस उतै मुकुट लटक वारो,
इन सीस आछी भांत चन्द्रिका निहारी मैं ।
उतै बनमाल इतै मोतिन की माल वर,
बानिक बिसाल हठी काम रति वारी मैं ॥
आव निज नीरै नैकु सुमन सुँघाऊँ तोहि,
सुखद सुहागभरी बात हितकारी मैं ।
निज अँधियारी में निकुञ्ज की गली में जात,
आजु ब्रजचन्द मुखचन्द की उजारी मैं ॥

८५

आजु हौं गई ही बीर सहज निकुञ्जन में,
कौतुक बिलोकि तहाँ सब सुखदानी के ।
कहत बने न मोपे अचरज बात हठी,
कहि कहि हारे मुख चार वेद बानी के ॥
श्रवन सुनै न मानै आँखिन दिखाऊँ तोहि,
चलि दुर मेरे साथ चरित गुमानी के ।
लूटै सुख मौटै करै मनुहार कोटै बैठे,
पायन पलोटै लाल राधा महारानी के ॥

८६

चाँदनी के आँगन बिछौना नीके चाँदनी के,
चाँदनी सी देखि अँखियान सुख लह्यौ है ।
चाँदनी सी चीर चारु चाँदनी के आभूषन,
चम्पक के गातन बखानौ जाते कह्यौ है ॥
हठी आस पास बैठी सुघर सुजान सखी,
जिन्हैं देखि रति को गुमान जात बह्यौ है।
राधे मुखचन्द की निकाई ब्रजचन्द आज,
अवनी अकास लौं प्रकास फैल रह्यौ है ॥

८७

कौल तें मुलामै कौन छवि कमला में तुलै,
फूलन तुला में चढ़ी प्रेम के पला मैं हैं ।
सेवै बसु जामै छोड़ छोड़ निज धामैं सुर,
पालन की बामैं करै पौन अचला मैं हैं ॥
रूप के झला मैं देखी नन्द के लला में हठी,
रति अबला मैं कहा सोभा नवला मैं है ।
चन्द की कला मैं न चमक-चपला में ऐसी,
ललित ललामैं राधे करती सलामैं है ॥

८८

सोहै सुररानी ब्रजरानी के समीप हठी,
सुन्दर सुघर सुकुमार तन छोटै री ।
एकै चौंर कीने एकै पानदान लीने,
एकै आबत की औरै करै अञ्चल की ओटै री ॥
एकै कर जोरे एकै करती निहोरे एकै,
गाय कै प्रबीनै मन प्यारी को अगोटै री ।
लूटै सुख मोटै एकै सेवती निखोटै एकै,
बाँधि-बाँधि जोटै कोटै पाइन पलोटै री ॥

८९

रम्भा को रमा को इन्दुमा को औ तिलोतमा को,
उमा को रमा को कीसमा कों हठी झावरो ।
कमला को विमला को नवला को चपला को,
सुखमा को उपमा को भलो चित चावरो ॥
मैनका को मोहिनी को सची सत्यभामा हूँ को,
रति रुकमनि जू को करिये निछावरो ।
तारा को तरङ्गना को तरन कला को ऐसे,
रूपन को रूप राधेरानी रूप रावरो ॥

९०

सुर रखवारी सुरराज रखवारी सुक,
संभु रखवारी रबि चन्द रखवारी है ।
रिषि रखवारी विधि वेद रखवारी गिरजा,
ने करी कीरति की कीरति सुभारी है ॥
दिग रखवारी दिगपाल रखवारी लोक,
थोक रखवारी गावै धराधर धारी है ।
ब्रज रखवारी ब्रजराज रखवारी हठी,
जन रखवारी वृषभान की दुलारी है ॥

९१

आउ आउ आली एक कौतुक दिखाऊँ तोहि,
बैठे एक सेज रतिपति को लजामैं री ।
कंजन करन मन रंजन के मंजन को,
खंजन प्रभंजन को अंजन लगामैं री ॥
हेरत हराकै हठी बोलत छबीली तब,
कुन्नसैं बजामैं पै परो सौ कछु पामैं रीं ।
बैठी दुरि कुञ्जन दिसा सी देखि लीन्ही मैं तो,
फूलन के झोरन झमाकै पाय झामैं री ॥

९२

बैठी है निकुञ्ज राधे फैलत प्रभा के पुञ्ज,
आस पास केसर सुगन्धन सनी रहैं।
चाँदनी सी चम्पक सी चपला चमीकर सी,
कमला सी विमला सी नवला घनी रहैं ॥
देखै ब्रजमाड़िली के लाड़िली के आगे हठी,
ठाड़े कर जोरे ब्रजचन्द से धनी रहैं ।
रम्भा सी तिलोतमा सी मैनका सी मोहिनी सी,
सची सी सिवा सी सबै सेवक बनी रहैं ॥

९३

हीरन के हार हिये मोतिन सिंगार किये,
बैनि औ छबान छिये व्याल दुति थोरी है ।
सुन्दर रदन चारु चन्द से बदन बैठी,
सोभा के सदन वारौं मदन की जोरी है ॥
कोकिल से बैन अरबिन्द ऐसे नैन चलि,
देखिये गुबिन्द बाल दीने भाल रोरी है ।
सोहै बैस थोरी हठी रंभा रति को री अति,
गौर तन गोरी वृषभानु की किशोरी है ॥

९४

आलसी हौं कूर हौं कपूत भाँति भाँतिन को,
और न उपाय मेरे ध्वाई मोहि कान्ह की।
करुना करोई हिये आपनौई जान हठी,
तें तौ प्रानप्यारी सदा करुनानिधान की ॥
दीनन की पाल लोकपाल दयासिंधु तोकौं,
ध्यावत गुपाल जिन दावानल पान की ।
सोसै नहीं मन मेरो दोसै नहीं काम राखे,
तेरेई भरोसै यह बेटी वृषभान की ॥

९५

रुक्मिनी सी रति सी सची सी सत्यभामा सी तू,
भीषम की माँ सी जमनासी गोतमासी है ।
रम्भासी रमा सी औ सुकेसी मंजुघोषा की सी,
नवलासी उमासी औ प्रमासी कीसमा सी है ॥
तारा सी तरंगना सी मैनका तिलोत्तमा सी,
राधा महारानी हठी छबि की जमासी है ।
कमला सी कमल सी नवला नवीन राजै,
छाजत छमा पै इन्दुमा सी चन्द्रमा सी है ॥

९६

रमा को कहा है रति रम्भा को कहा है ए,
बखानै बिधि चारों मुख चारों देव नौ गुनो ।
सची को कहा है सत्यभामा को कहा है अरु,
चन्द को कहा है जामैं राजत है औगुनो ॥
चम्पा को कहा है चामीकर को कहा है चारु,
करकै बिचार निरधार हठी जौ गुनो ।
राधे महारानी जू को रूप सब रूपन तै,
दुगुनो है तिगुनो है चौगुनो है सौ गुनो ॥

९७

गिरपति लागी मेरु मेरुपति लागी भूमि,
भूमिपति सेस कोल कच्छ नीर चारी सौं ।
दिगपति लागी दिगपालन के हाथ हठी,
सुरपति लागी सुरपाल छत्रधारी सौं ॥
दानपति करन करन पति लागी बलि,
बलिपति लागी कैलास के बिहारी सौं ।
तीनों लोकपति ब्रजपति सौ लगी है,
ब्रजपति पति लागी वृषभान की दुलारी सौं ॥

९८

चाँदनी के चौक बैठी चाँदनी के आभरन,
चम्पक वरन हठी ऐसी दुति कीकी है ।
मोतिन के हार गरै मोतिन सौं मांग भरै,
मोतिन सिंगार करै प्यारी प्रान पीकी है ॥
ऐसी सुकुमारी वृषभान की कुमारि और,
सबै रूप मोहिनी की लागत रती की है ।
रमा तै उमा तै कौलमा तै किसमा तै इन्दुमा,
तै परमा तै चन्द्रमा तै चारु नीकी है ॥

९९

गति पै गयन्द-वारौं पग अरविन्द वारौं,
हठी अलि वृन्द वारों अलकन फन्द पै।
गुलफ गुलिन्द वारौं सीतला–पै सिन्धु वारौं,
सकल सुगन्ध वारौं सुख की सुगन्ध पै॥
कटि पै मृगेन्द्र बारौं तन छवि वृन्द वारौं,
बेनी पै फनिन्द वारौं जात नदनन्द पै।
ओठ जीवबन्धु वारौं हाँसी सुधाकन्द वारौं,
कोटि कोटि चंद वारौं राधे मुखचंद पै ॥

१००

कीरति किसोरी वृषभान की दुलारी राधा,
सहज सखीन लै निकुञ्जन को डगरी।
चरन की चौकी की चमक चारु अंगन की,
कैयो रंग रंगन की जोति ब्रज बगरी ॥
देखैं पग द्वारै वारै तन मन प्रान हठी,
रूप चक चौंधा रही चौंक सब नगरी।
कैधौं सुखमा है कै दमा है कै तमा है कै,
उमा है इन्दुमा है कै रमा है रूप आगरी ॥

१०१

मनिन अटा पै ठाढ़ी पुरट पटा पै प्यारी,
रूप की घटा सी देखि रीझत गुपाल है ।
चरन करन की ओ चमक आभरन की,
तन अँभरन की सु फैली प्रभा लाल है ॥
जकि रहे थकि रहे देखि चकवक रहे,
हठी नर नारिन कौ ऐसो भयो हाल है ।
कैंधौं कछू ख्याल है कै मोहिनी कौ जाल है,
कै लालन की माल है कै मदन मसाल है ॥

१०२

गिरि कीजे गोधन मयूर नब कुँजन को,
पसु कीजे महाराज नन्द के बगर को ।
नर कीजे तौन जौन राधे राधे नाम रटै,
तट कीजै बर कूल कालिंदी कगर को ॥
इतने पै जोई कछु कीजिये कुँवर कान्ह,
राखिये न आन फेर हठी के झगर को ।
गोपी पद पंकज पराग कीजे महाराज,
तृन कीजे रावरेई गोकुल नगर को ॥

१०३

चौक परी मुखन समोई लेत सासन को,
आँसू ढार कहै सुन सखी अभिराम री ।
उतही बिसासी ब्रजबासी कान्ह भेंटौ भटू,
सारिका सुबा के सोर कीनै काक काम री ॥
एक हौं निहोरी हेम पूतरी स्वपन माँहिं,
चार्‌यो ओर सिन्धु शोभा ललित ललाम री ।
कित वह ठाम कित मनिन के धाम हाइ,
कित सुखजाम कितै गये घनश्याम री ॥

॥ श्रीराधासुधाशतक सम्पूर्ण ॥

ग्रन्थ के दुर्बोध-शब्दार्थ

पृष्ठ सं.	शब्द	अर्थ
२	रिषिसुदेववसु	सम्वत् १८३०
९	पावक	सुवर्ण
१०	मनी	नीलमणि
११	गिलम	नरम रुई की पतली गद्दी
१४	जीवनन्द	दुपहरिया का फूल
१४	जातरूप	सोना और कमल
१६	कञ्चन सटा	लट व लता
३	केयूर	बाज
४५	छबान	एड़ी
४९	दमा	बिजयी
४९	तमा	संध्या
४९	इन्दुमा	पूर्णिमा

राधे किशोरी दया करो

हे किशोरी राधारानी! आप मेरे ऊपर दया करिये। इस जगत में मुझसे अधिक दीन-हीन कोई नहीं है; अतः आप अपने सहज करुणामय स्वभाव से मेरे ऊपर भी तनिक दया दृष्टि कीजिये।

राधे किशोरी दया करो।

हम से दीन न कोई जग में, बान दया की तनक ढरो।
सदा ढरी दीनन पै श्यामा, यह विश्वास जो मनहि खरो॥
विषम विषय विष ज्वाल माल में, विविध ताप तापनि जु जरो।
दीनन हित अवतरी जगत में, दीनपालिनी हिय विचरो॥
दास तुम्हारो आस और (विषय) की, हरो विमुख गति को झगरो।
कबहुँ तो करुणा करोगी श्यामा, यही आस ते द्वार पर्‌यो॥

(परम पूज्य श्रीरमेशबाबाजी महाराज)

मेरे मन में यह सच्चा विश्वास है कि श्यामा जू सदा से दीनों पर दया करती आयी हैं। मैं अनादिकाल से माया के विषम विष रूपी विषयों की ज्वालाओं से उत्पन्न अनेक प्रकार के तापों की आग में जलता आया हूँ। इस जगत् में आपका अवतार दीनों के कल्याण के लिए हुआ है। हे दीनों का पालन करने वाली श्री राधे! कृपा करके आप मेरे हृदय में निवास कीजिये। मैं आपका दास होकर भी संसार के विषयों और विषयी प्राणियों से सुख पाने की आशा किया करता हूँ। आप मेरी इस विमुखता के क्लेश का हरण कर लीजिए। हे श्यामा जू! जीवन में कभी तो ऐसा अवसर आएगा जब आप मेरे ऊपर करुणा करेंगीं, इसी आशा के बल पर मैंने आपके द्वार पर डेरा जमा लिया है।